ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 8.4
IJAR 2021; 7(4): 369-372
www.allresearchjournal.com
Received: 01-02-2021
Accepted: 06-03-2021

मनोज कुमार सिंह
शोध छात्र शिक्षा, अवधेश प्रताप सिंह वि.वि., रीवा, मध्या प्रदेश, भारत

डॉ. डी.एस. सिंह बघेल
सेवानिवृत्त आचार्य शिक्षा, लाइफ लांग लर्निंग विभाग अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवा, मध्या प्रदेश, भारत

Corresponding Author:
मनोज कुमार सिंह
शोध छात्र शिक्षा, अवधेश प्रताप सिंह वि.वि., रीवा, मध्या प्रदेश, भारत

रीवा जिले में राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा अभियान के अन्तर्गत किए गए शैक्षिक व्यवस्थाओं का समीक्षात्मक अध्ययन

मनोज कुमार सिंह एवं डॉ. डी.एस. सिंह बघेल

सारांश
प्रस्तुत शोध पत्र रीवा जिले में राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा अभियान के अन्तर्गत किए गए शैक्षिक व्यवस्थाओं का समीक्षात्मक अध्ययन पर आधारित है। प्रारंभिक शिक्षा के सार्वभौमीकरण के लिए प्रारंभ किए गए कार्यक्रमों के प्रभाव के कारण माध्यमिक स्तर पर शिक्षा की गुणवत्ता बढ़ी है। इसी समय, भारत का भव्य धारणीय आर्थिक वृद्धि माध्यमिक तथा उच्च शिक्षा के लिए घरेलू तथा श्रम बाजार की मांग को बढ़ाता है। माध्यमिक शिक्षा के विकास हेतु कई केन्द्र प्रायोजित योजनाएँ देश में प्रारंभ की गई हैं। माध्यमिक शिक्षा के सार्वभोमिकरण के लिए भारत सरकार द्वारा उठायें गये कदमों में राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा अभियान एक महत्वपूर्ण कदम है। राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा अभियान के अन्तर्गत शोध क्षेत्र में हाईस्कूल स्तर की शिक्षा में प्रयास की स्थिति ज्ञात करने के लिए प्राप्त आंकड़ों को काई वर्ग द्वारा विश्लेषित किया गया। तथा यहा पाया गया कि राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा अभियान के अन्तर्गत शोध क्षेत्र में हाईस्कूल स्तर की शिक्षा में काफी प्रयास किये जा रहे है। शोध क्षेत्र के शहरी तथा ग्रामीण अंचल में रमसा अभियान के द्वारा किए जा रहें प्रयासों से उनके शैक्षिक अधिगम में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

कूटशब्दः रीवा जिला, राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा अभियान, शैक्षिक व्यवस्था

1. प्रस्तावना
शिक्षा मानव विकास का मूल साधन है। इसके द्वारा व्यक्ति की जन्मजात शक्तियों का विकास उसके ज्ञान एवं कला कौशल में वृद्धि एवं व्यवहार में परिवर्तन तथा परिमार्जन किया जाता है और उसे सभ्य, सुसंस्कृत एवं योग्य नागरिक बनाया जाता है। बालक जब इस संसार में आता है तो वह बोलना, चलना, हँसना, खेलना इत्यादि क्रियाएँ अपने माता–पिता द्वारा या परिवार में सीखता है। वह बालक परिवार से विद्यालय में प्रवेश करता है तो वहाँ से नवीन परिस्थितियों का सामना करना पड़ता है। इन परिस्थितियों से समायोजन स्थापित करने हेतु वह अनुकरण का सहारा लेता है। विद्यालय में वह पढ़ता लिखता है, सामाजिक आचरण, अच्छी आदतें आदि को सीखता है। सीखने की यह प्रक्रिया आजीवन चलती रहती है और सीखने की प्रक्रिया द्वारा अपने व्यवहार में परिमार्जन एवं परिवर्तन करता जाता है। किसी समाज में सदैव चलने वाली सीखने–सिखाने की यह सोद्देश्य प्रक्रिया ही शिक्षा कहलाती है।
राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा अभियान (RMSA) को मार्च 2009 में माध्यमिक शिक्षा में प्रवेश बढ़ाने तथा गुणवत्ता में सुधार के उद्देश्य से आरंभ किया गया। अन्य बातों के साथ–साथ किसी बस्ती से तर्क संगत दूरी के अंदर माध्यमिक स्कूल का प्रावधान करके माध्यमिक अवस्था तक नामांकन बढ़ाने, 2017 तक 100 प्रतिशत जी. ई.आर. सुनिश्चित करने तथा 2020 तक सार्वभौमिक अवधारणा प्राप्त करने के उद्देश्य से निर्धारित मापदंडों की पुष्टि करने तथा सभी माध्यमिक स्कूलों को समर्थ बनाना और लैंगिक, सामाजिक, आर्थिक एवं विकलांगता संबंधी बाधाओं को दूर करना शामिल है।
रमसा अभियान के तहत 2005-06 में 52-26 प्रतिशत की तुलना में अपने कार्यान्वयन के पांच वर्श के भीतर किसी भी बस्ती से उपयुक्त दूरी पर एक माध्यमिक स्कूल उपलब्ध कराकर कक्षा 9-10 के लिए 75 प्रतिशत का सकल नामांकन अनुपात प्राप्त करने पर ध्यान दिया गया है। सभी माध्यमिक स्कूलों को निर्धारित मानदण्डों के अनुरूप बनाकर माध्यमिक स्तर पर दी जा रही शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार करना। लैगिंक, सामाजार्थिक तथा निःशक्तता बाधाएँ हटाना। वर्ष 2017 अर्थात 12वीं पंचवर्षीय योजना के अंत तक माध्यमिक स्तर शिक्षा तक व्यापक पहुंच। वर्ष 2020 तक छात्रों को स्कूल में बनाएं रखने में वृद्धि और उसका सुलभीकरण हुआ है।
माध्यमिक शिक्षा के लिए शिक्षा का अधिकार अधिनियम, निःशुल्क तथा अनिवार्य शिक्षा, विद्यार्थी केन्द्रित अधिगम, भयमुक्त अधिगम वातातरण आदि पर बल देता है। शिक्षा के किसी भी स्तर के लिए स्थापित नीतियों का प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष प्रभाव शिक्षा के अन्य स्तरों पर होता है क्योंकि हमारी शिक्षा व्यवस्था के विभिन्न स्तर

अंर्तसंबंधित हैं तथा एक–दूसरे के लिए आधार प्रदान करते है। शिक्षा का अधिकार अधिनियम विद्यार्थियों तथा शिक्षकों के बीच एक मित्रवत वातावरण पर बल देता है जिसके माध्यम से विद्यार्थी अपने संदेह तथा समस्या को कम कर सकते है तथा इस आदत के परिणामस्वरूप वे माध्यमिक स्तर पर अच्छा निष्पादन भी कर सकते है।

2. अध्ययन की आवश्यकता

शोधार्थी द्वारा प्रस्तुत शोध कार्य भारत सरकार तथा राज्य सरकारों के द्वारा वर्तमान में हाई स्कूल स्तर (कक्षा 10) में शैक्षिक सुधार हेतु किये जाना वाला एक प्रमुख अभियान है। वैसे तो किसी भी विषय में किये जाने वाले शोध कार्य महत्वपूर्ण होते है। फिर भी शिक्षा के क्षेत्र में किये जाने वाले कार्यों का महत्व व्यापक होता है। शिक्षा में ऐसे विषयों में किये गये शोध कार्य जो वर्तमान शैक्षिक समस्याओं से संबंधित है, वे आज के स्थिति में अधिक महत्वपूर्ण होते है। शोधार्थी द्वारा प्रस्तुत शोध कार्य क्षेत्र में ही नहीं वरन् अन्य क्षेत्रों में राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा अभियान के क्रिया प्रणाली, उसका क्षेत्र में अनुप्रयोग तथा इसके परिणामों को जानने में उपयोगी होगा।

3. उद्देश्य

अतः प्रत्येक क्रिया का कुछ उद्देश्य अवश्य होता है बिना उद्देश्य के विभिन्न प्रकार कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है। इन्हीं उद्देश्यों को ध्यान में रखकर शोध कार्य किया जाता है। प्रस्तुत शोध प्रबन्ध में निम्नलिखित उद्देश्य है–

- राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा अभियान के अन्तर्गत शोध क्षेत्र में हाईस्कूल स्तर की शिक्षा में प्रयास की वस्तुस्थिति ज्ञात करना।
- शोध क्षेत्र के शहरी तथा ग्रामीण अंचल में रमसा अभियान के द्वारा किए जा रहें प्रयासों से उनके शैक्षिक अधिगम की स्थिति का तुलनात्मक अध्ययन करना।

4. शोध की परिकल्पनाएँ

1. "राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा अभियान के अन्तर्गत शोध क्षेत्र में हाईस्कूल स्तर की शिक्षा में काफी प्रयास किये जा रहे है।"
2. "शोध क्षेत्र के शहरी तथा ग्रामीण अंचल में रमसा अभियान के द्वारा किए जा रहें प्रयासों से उनके शैक्षिक अधिगम में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।"

5. शोध समस्या का सीमांकन

प्रस्तुत शोध कार्य का क्षेत्र रीवा जिला है। अध्ययन में रीवा जिले के शहरी तथा ग्रामीण दोनों क्षेत्रों से हाई स्कूल स्तर के विद्यालयों को लिया गया है। प्रस्तुत शोध में कक्षा-10 के छात्र–छात्राओं को सम्मिलित किया गया है।

समष्टि व प्रतिदर्शः प्रस्तुत शोध अध्ययन में रमसा व लोकव्यापीकरण के लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु शासकीय प्रयासों एवं प्रभावों का गहन अध्ययन करने के लिए न्यादर्श के रूप में चयनित प्रत्येक विकासखण्ड से 5-5 शासकीय हाईस्कूल स्तर के विद्यालय जिसमें 2 शहरी क्षेत्र तथा 3 ग्रामीण क्षेत्र से कुल 45 विद्यालय, प्रत्येक विद्यालय के प्राचार्य अर्थात कुल 45 प्राचार्य, प्रत्येक विद्यालयों से 3-3 शिक्षक कुल 135 शिक्षक, प्रत्येक विद्यालय से 10-10 छात्र–छात्राएं कुल 450 विद्यार्थी, प्रत्येक विद्यालय से 2-2 अभिभावक कुल 90 अभिभावक व जिला स्तर पर रमसा प्रभारी का चयन दैव निदर्शन पद्धति से साक्षात्कार हेतु किया गया है। इस प्रकार यह अध्ययन दोनों दृष्टियों से सैद्धान्तिक एवं अनुभवाश्रित परिपूर्ण होगा।

6. अध्ययन विधि

- **सर्वेक्षण अध्ययन विधिः** सर्वेक्षण अनुसंधान का एक महत्वपूर्ण अंग है। इसके द्वारा शोध समस्या के विभिन्न पक्षों से सम्बन्धित आंकड़ों का संग्रहण किया जाता है। आंकड़े मुख्य तथा वर्तमान स्तर का निर्धारण, वर्तमान स्तर की मान्य स्तर से तुलना, तथा वर्तमान स्तर को विकसित करने में महत्वपूर्ण उपादान होते हैं। सर्वेक्षण में व्यक्ति की अपेक्षा तथ्यों, परिस्थितियों तथा गणनाओं को प्राथमिकता दी जाती है।
- **साक्षात्कार विधिः** शैक्षिक अनुसंधान में साक्षात्कार विधि का प्रयोग सर्वाधिक किया जाता है। इस विधि के द्वारा गुणात्मक एवं संख्यात्मक दोनो प्रकार की जानकारियाँ प्राप्त की जा सकती हैं। इस अनुसंधान में भी शोधार्थी ने साक्षात्कार विधि का प्रयोग किया है।
- **साख्यिकीय विधिः** सर्वेक्षण तथा साक्षात्कार विधि से प्राप्त ऑकड़ो का वर्गीकरण एवं सारणीयन किया गया है। जिनकी व्याख्या एवं विष्लेषण हेतु, सांख्यकीय विधियॉ प्रयोग में लाई गयी है। प्रस्तुत शोधकार्य में परिकल्पनाओं का परीक्षण सांख्यकीय विधियों द्वारा करने के लिये-Mean, प्रतिशत; %), S.D., Chisquare test, 't' Test आदि प्रयोग किये गये है, साथ ही गुणात्मक विश्लेषण पर भी ध्यान रखा गया हैं।

7. शोध उपकरण

प्रस्तुत शोध में स्वनिर्मित अधिकारी, प्राचार्य, अभिभावक साक्षात्कार प्रपत्र, शिक्षक एवं छात्र प्रश्नावली प्रपत्र के माध्यम से राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा अभियान के अन्तर्गत शोध क्षेत्र में हाईस्कूल स्तर की शिक्षा की वस्तुस्थिति ज्ञात की गयी है। तथा छात्रों के अधिगम स्तर ज्ञात करने के लिए परीक्षाफल तथा स्वनिर्मित प्रश्नों के द्वारा परीक्षण किया गया है।

8. पूर्व अध्ययन समीक्षा

पूर्ववर्ती अध्ययन से तात्पर्य अनुसंधान की समस्या से सबन्धित उन सभी प्रकार की पुस्तकों, ज्ञान कोशों, पत्र–पत्रिकाओं, शोध पत्रों तथा अभिलेखों आदि से है, जिनके अध्ययन से अनुसंधानकर्ता को अपनी समस्या के चयन, परिकल्पनाओं के निमार्ण, अध्ययन की रूपरेखा तैयार करने तथा कार्य को आगे बढ़ाने में सहायता मिलती है इनमें से मुख्य रूप से अग्रवाल, जे. सी. (2010)] [1] अंसारी, एम.एम. (1988)[2], मेहता, सी. (1970)[3], निगम, बी.के. तथा शर्मा, एस.आर. (1993)[4], पाण्डेय, जितेन्द्र कुमार (2007)[5], पाण्डेय, आर.एस. (1997)[6], पाठक, पी.डी (2007)[7], सिंह एवं सिंह (2017)[8] एवं यादव एवं सिंह (2018)[9] ने शोध विधि एवं राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा अभियान के अन्तर्गत किए गए शैक्षिक व्यवस्थाओं से सम्बन्धित कार्य किये है।

9. रीवा जिले का सामान्य परिचय

जिला रीवा मध्य प्रदेश के उत्तरी–पूर्वी कोने में स्थित है। रीवा का नामकरण नर्मदा नदी के दूसरे नाम 'रेवा' पर आधारित है। रीवा नगर का नाम पहले शायद 'रेवा' रखा गया था। उसी का बिगड़ा रूप अब रीवा बन गया है।

इसके उत्तर में उत्तर प्रदेश के बांदा एवं इलाहाबाद जिले, पूर्व तथा पूर्व–उत्तर में उत्तर प्रदेश का ही मिर्जापुर जिला, दक्षिण में अपने राज्य का सीधी जिला और दक्षिण–पश्चिम तथा पश्चिम में सतना जिला है। इसका आकार लगभग त्रिभुज के समान है। इसका विस्तार 24-18^0 उत्तरी अक्षांश से 25^0 उत्तरी अक्षांश तथा 81-2^0 पूर्वी देक्षांश से 82-18^0 पूर्वी देक्षांश के मध्य है। रीवा जिले का क्षेत्रफल 6287 वर्ग किलोमीटर है।

10. परिणामों का विश्लेषण एवं व्याख्या

शोधार्थी द्वारा किया गया कोई भी शोध कार्य सही अर्थों में तभी प्रतिबिम्बित होता है, जब शोधार्थी द्वारा उस समस्या की वास्तविक

स्थिति का मूल्यांकन किया जाय। इसके लिये यह आवश्यक है, कि शोधार्थी द्वारा शोध अध्ययन में उपयोग किये गये समस्त शोध उपकरणों द्वारा प्राप्त जानकारियों को व्यवस्थित क्रम में सारणीबद्ध किया जाय, निम्नानुसार है–

परिकल्पना क्र. 1: "राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा अभियान के अन्तर्गत शोध क्षेत्र में हाईस्कूल स्तर की शिक्षा में काफी प्रयास किये जा रहे है।"

तालिका 1: राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा अभियान के अन्तर्गत शोध क्षेत्र में हाईस्कूल स्तर की शिक्षा में काफी प्रयास किये जा रहे है, का अध्ययन

क्र.	न्यादर्श में चयनित	संख्या	रमसा अभियान के अन्तर्गत शोध क्षेत्र में हाईस्कूल स्तर की शिक्षा में काफी प्रयास					
			किये जा रहे है		नहीं किये जा रहे है		नही पता	
			संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
1.	अधिकारी	27	27	100.00	-	-	-	-
2.	प्राचार्य	45	45	100.00	-	-	-	-
3.	शिक्षक	135	93	68.89	25	18.52	17	12.59
4.	विद्यार्थी	450	321	71.33	68	15.11	61	13.56
5.	अभिभावक	90	61	67.78	17	18.89	12	13.33
	योग	747	547	73.23	110	14.73	90	12.05

विश्लेषण एवं व्याख्या

तालिका एवं आरेख क्र. 1 से यह स्पष्ट होता है, कि शोध क्षेत्र के 73.23 प्रतिशत यह मानते हैं, कि राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा अभियान के अन्तर्गत शोध क्षेत्र में हाईस्कूल स्तर की शिक्षा में काफी प्रयास किये जा रहे है। 14.73 प्रतिशत यह मानते हैं, कि राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा अभियान के अन्तर्गत शोध क्षेत्र में हाईस्कूल स्तर की शिक्षा में काफी प्रयास नहीं किये जा रहे है, जबकि 12.05 प्रतिशत को इसके सम्बंध में कोई जानकारी नहीं है।

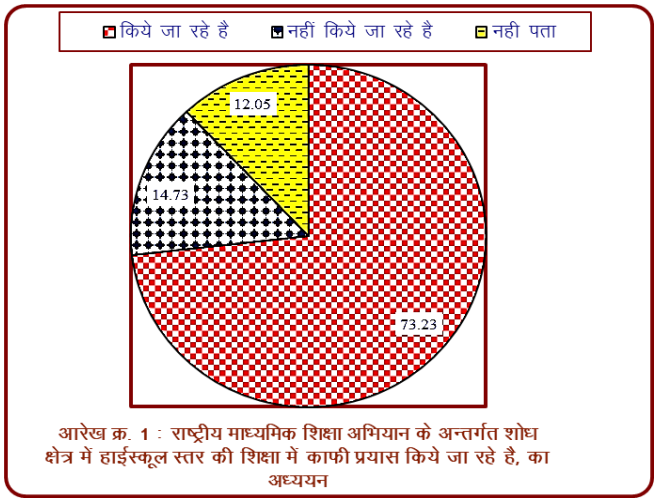

आरेख क्र. 1 : राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा अभियान के अन्तर्गत शोध क्षेत्र में हाईस्कूल स्तर की शिक्षा में काफी प्रयास किये जा रहे है, का अध्ययन

सांख्यिकीय विश्लेषण

आरेख 1: काई वर्ग की गणना

आवृत्ति	राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा अभियान के अन्तर्गत शोध क्षेत्र में हाईस्कूल स्तर की शिक्षा में काफी प्रयास		
	किये जा रहे है	नहीं किये जा रहे है	नही पता
F_o	547	110	90
F_e	249.00	249.00	249.00
F_o-F_e	298.00	-139.00	-159.00
$(F_o-F_e)^2$	88804.00	19321.00	25281.00
$\frac{(F_0-F_e)^2}{F_e}$	356.64	77.59	101.53

$$\chi^2 = \Sigma \frac{(F_0-F_e)^2}{F_e}$$

$\chi^2 = 535.77$

df = (r-1) (c-1)
df = (2-1) (3-1)
df = 1 x 2
df = 2

विश्लेषण एवं व्याख्या

राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा अभियान के अन्तर्गत शोध क्षेत्र में हाईस्कूल स्तर की शिक्षा में प्रयास की स्थिति ज्ञात करने के लिए प्राप्त आंकड़ों को काई वर्ग द्वारा विश्लेषित किया गया। गणना द्वारा χ^2 का मान 535.77 है, जबकि तालिकामान 2df पर तथा 0.05 व 0.01 स्तर (level) पर क्रमशः 5.99 व 9.21 है। गणना मान अधिक होने के कारण सार्थक है कि राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा अभियान के अन्तर्गत शोध क्षेत्र में हाईस्कूल स्तर की शिक्षा में काफी प्रयास किये जा रहे है। परिकल्पना के संगत है।
अतः परिकल्पना सत्यापित होती है।

परिकल्पना क्र. 2: "शोध क्षेत्र के शहरी तथा ग्रामीण अंचल में रमसा अभियान के द्वारा किए जा रहें प्रयासों से उनके शैक्षिक अधिगम में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।"

तालिका 2: शहरी तथा ग्रामीण अंचल में रमसा अभियान के द्वारा किए जा रहें प्रयासों से उनके शैक्षिक अधिगम का अध्ययन

समूह		शहरी अंचल के छात्र	ग्रामीण अंचल के छात्र
समूह की संख्या (N)		180	270
मध्यमान (M)		57.83	57.44
मानक विचलन (SD)		16.61	17.51
क्रान्तिक निष्पत्ति (C.R.)		0.27	
निष्कर्ष	0.05 सार्थकता स्तर पर	सार्थक अन्तर नहीं है	
	0.01 सार्थकता स्तर पर	सार्थक अन्तर नहीं है	

विश्लेषण एवं व्याख्या

उपर्युक्त तालिका में शहरी तथा ग्रामीण अंचल में रमसा अभियान के द्वारा किए जा रहें प्रयासों से उनके शैक्षिक अधिगम के लिए

दोनों समूहों का मध्यमान क्रमशः 57.83 तथा 57.44 तथा मानक विचलन क्रमशः 16.61 तथा 17.51 प्राप्त हुआ। दोनों समूहों के मध्यमानों में पाये जाने वाले सार्थकता की जाँच के लिए क्रान्तिक अनुपात परीक्षण (C.R. Test) किया गया, जिसमें CR का मान 0.27 प्राप्त हुआ जो 0.05 सार्थकता स्तर के मान 1.96 तथा 0.01 सार्थकता स्तर के मान 2.58 से कम है। अतः शैक्षिक अधिगम के लिए दोनों समूहों में सार्थक अन्तर पाया गया।

अतः उपरोक्त के आधार पर यह तथ्य सामने आता है कि शहरी तथा ग्रामीण अंचल में रमसा अभियान के द्वारा किए जा रहें प्रयासों से उनके शैक्षिक अधिगम के मध्यमान बराबर है और इन दोनों मध्यमानों में सार्थक अन्तर नहीं है। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि शहरी तथा ग्रामीण अंचल में रमसा अभियान के द्वारा किए जा रहें प्रयासों से उनके शैक्षिक अधिगम में कोई अन्तर नही पाया जाता है। यह परिकल्पना के संगत है।

अतः परिकल्पना सत्यापित होती है।

निष्कर्ष

1. राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा अभियान के अन्तर्गत शोध क्षेत्र में हाईस्कूल स्तर की शिक्षा में काफी प्रयास किये जा रहे है।
2. शोध क्षेत्र के शहरी तथा ग्रामीण अंचल में रमसा अभियान के द्वारा किए जा रहें प्रयासों से उनके शैक्षिक अधिगम में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

सन्दर्भ

1. अग्रवाल, जे.सी. (2010). डेवेलपमेंट ऑफ एजुकेशन सिस्टम इन इंडिया, नई दिल्ली, शिप्रा पब्लिकेशन्स.
2. अंसारी, एम.एम. (1988). डिटरमाइनेट्स ऑफ कोस्ट्स इन डिस्टेंस एजुकेशन, इन कौल, बी.एन. सिंह, बी. एवं अंसारी एम.एम. स्टडीज इन डिस्टेंस एजुकेशन, नई दिल्ली, ए.आई.यू. एवं इग्नू.
3. मेहता, सी.–'नेशनल पॉलिसीर ऑफ एलिमेन्ट्री टीचर एजूकेशन इन इण्डिया'', एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली, 1970.
4. निगम, बी.के. तथा शर्मा, एस.आर.–''भारतीय शिक्षा का इतिहास एवं समस्यायें'' (प्रथम संस्करण) कनिष्ठ प्रकाशन, नई दिल्ली, 1993.
5. पाण्डेय, जितेन्द्र कुमार–भारत में आधुनिक शिक्षा का प्रसारः दशा और दिशा, कुरुक्षेत्र मासिक पत्रिका, ग्रामीण विकास मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली, 2007, वर्ष 53, अंक 11, पृ. 7-9.
6. पाण्डेय, आर.एस.–'एजूकेशन एस्टर डे एण्ड टुडे' (एक विश्लेषण) हॉरिजन पब्लिशर्स, इलाहाबाद, 1997.
7. पाठक, पी.डी–भारतीय शिक्षा और उसकी समस्यायें इक्कीसवाँ संस्करण, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा 2007.
8. सिंह, विवेक कुमार एवं सिंह, डॉ.डी.एस. बघेल–किशोरावस्था के विद्यार्थियों में शैक्षिक उपलब्धि पर अभिभावक अभिप्रेरणा का पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन, International Journal of Multidisciplinary Education and Research 2017;2(5):79-83.
9. यादव, विजय शंकर एवं सिंह, डॉ.डी.एस. बघेल–इलाहाबाद जिले में माध्यमिक विद्यालयों के छात्र–छात्राओं की मानसिक सजगता का अध्ययन, International Journal of Advanced Educational Research 2018;3(4):35-38.